नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी
स्थापित 2005 ई.

पत्रांक................................ दिनांक : 08.08.2022

प्रकाशनार्थ

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत भारत छोड़ो आंदोलन दिवस के अवसर पर प्राचीन इतिहास एवं इतिहास विषय के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय संस्कृति के विविध आयाम' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं सांस्कृतिक विभाग के वरिष्ठ आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष प्रो. राजवन्त राव ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत अपने उषा काल से ही सांस्कृतिक वैविधताओं से परिपूर्ण एक धर्मप्राण देश रहा है। भारतीय संस्कृति विचार, संस्कार एवं आचरण का सम्मिश्रण है। यद्यपि कि भारतीय साहित्यिक वांग्मय में संस्कृति शब्द का प्रथम उल्लेख यजुर्वेद में प्राप्त होता है, तथापि यह उससे भी प्राचीन काल से भारतीय समाज की नियामक एवं विस्तारक रही है। भारतीय संस्कृति सृष्टि के आरंभ से अद्यतन निरंतर परिवर्तित एवं परिवर्द्धित स्वरूप में समाज में प्रवाह मान है। भारतीय संस्कृति सही मायनों में प्रवाही संस्कृति है। विद्यार्थियों को वर्तमान संस्कृति एवं समाज के परिप्रेक्ष्य में बताते हुए उन्होंने आगे कहा कि हम सभी को अपने अपने क्षेत्र में कुशलता के साथ–साथ दक्षता एवं उत्तरदायित्व बोध का वहन करना ही चाहिए। बिना दायित्व बोध की कुशलता अव्यवहारिक होती है। राष्ट्र के विकास में अपने इन्हीं गुणों के साथ हम सभी को अपना–अपना योगदान सुनिश्चित करना होगा। तभी वास्तव में राष्ट्र की पूर्ण उन्नति सम्भव है।

कार्यक्रम का संचालन प्राचीन इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ सुबोध कुमार मिश्र ने तथा अतिथि के प्रति आभार इतिहास विभाग के अध्यक्ष श्री अभिषेक त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर इतिहास एवं प्राचीन इतिहास के समस्त विद्यार्थी एवं शिक्षक उपस्थित रहें।

(डॉ. सुधा शुक्ल)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी